वर्ष 2007-2008 की हिन्दी रिपोर्ट

पुस्तकालय
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की संघ की राजभाषा नीति के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं सार्थक कार्यान्वयन के लिए निरन्तर प्रयास करता आ रहा है। इस प्रयोजन को बढ़ावा देने के लिए संस्थान रोजमर्रा के सरकारी कार्यो के साथ-साथ वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रकृति के कार्यो के निःष्पादन में भी राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को समुचित बढ़ावा दे रहा है। कई वैज्ञानिक संगोष्ठियों एवं बैठकों में कार्यवाही हिन्दी में भी आयोजित की जाती है। संस्थान में लगभग 90 प्रतिशत से अधिक अधिकारियों/ कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है तथा वे आवश्यकतानुसार अपने सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करते हैं।

संस्थान में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग ज्यादा से ज्यादा हो और इसके प्रति अधिकारियों के मन में एक सार्थक सोच और सुरूचि विकसित हो, इसके लिए राजभाषा विभाग एवं जल संसाधन मंत्रालय के निर्देशानुसार अधिकारियों के लिए **"हिन्दी में सर्वाधिक डिक्टेशन देने संबंधी प्रोत्साहन योजना"** तथा कर्मचारियों के लिए **"सर्वाधिक मूल हिन्दी कार्य"** प्रोत्साहन योजना लागू की गई है।

संस्थान के आंतरिक प्रभागों/अनुभागों में किए जा रहे हिन्दी कार्यो का समय-समय पर निरीक्षण भी किया जाता है तथा निदेशक महोदय द्वारा व्यक्तिगत रूप से रूचि लेकर संबंधित अनुभागों में पाई गई कमियों को दूर करने के लिए सख्त निर्देश भी दिए जाते हैं। इसी प्रकार क्षेत्रीय केन्द्रों के निरीक्षण के लिए भी योजनाओं को अंतिम रूप दिया जा चुका है।

संस्थान परिसर में सभी साइन बोर्ड, नोटिस बोर्ड व नामपट्ट द्विभाषी रूप में बनवाए गए हैं। महान व्यक्तियों के विचारों को संस्थान के मुख्य-मुख्य स्थानों पर प्रमुखता से लगाया गया है। रबड़ की मोहरें, रजिस्टर, फाइल शीर्ष, मानक फार्म सभी द्विभाषी रूप में उपलब्ध हैं तथा प्रयोग में लाए जा रहे हैं। सेवा पुस्तिकाओं में प्रविष्टियाँ यथासंभव हिन्दी में की जा रही हैं।

संस्थान के पदाधिकारियों को राजभाषा हिन्दी संबंधी प्रशिक्षण देने तथा उनके मन में हिन्दी के प्रयोग के प्रति पनपी झिझक को दूर करने के दृष्टिकोण से समय-समय पर हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं जिसमें हिन्दी के प्रबुद्ध व्यक्तियों को व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया जाता है। पिछली कार्यशाला दिनांक 29 फरवरी, 2008 को **"राजभाषा कार्यान्वयन"** विषय पर आयोजित की गई जिसमें 26 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। भारतीय पैट्रोलियम संस्थान, देहरादून के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ. दिनेश चमोला इस कार्यशाला में मुख्य व्याख्यानदाता के रूप में विराजमान थे।

संस्थान में हो रहे हिन्दी कार्यो की समीक्षा तथा इनमें और अधिक संवृद्धि सुनिश्चित करने तथा कारगर रणनीति बनाने के दृष्टिकोण से समय-समय पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें आयोजित की जाती हैं तथा व्यापक चर्चा-परिचर्चा के पश्चात आगामी तिमाहियों के लिए कार्य योजनाएं तैयार की जाती हैं। राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पिछली बैठक दिनांक 24 मार्च, 2008 को आयोजित की गई जिसमें पिछली बैठक की अनुवर्ती कार्रवाई की समीक्षा की गई तथा आगामी तिमाही के लिए कार्य योजना निर्धारित की गई तथा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी कई महत्वपूर्ण निर्णय भी लिए गए।

संस्थान हर वर्ष अपनी हिन्दी वार्षिक पत्रिका **"प्रवाहिनी"** का प्रकाशन करता है जिसमें वैज्ञानिक, इंजीनीयरी, जलविज्ञान, साहित्य तथा राजभाषा संबंधी लेखों को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता है। इसमें संस्थान ही नहीं अपितु संस्थानेतर व्यक्तियों के लेखों को भी प्रकाशित किया जाता है। प्रथम तीन उत्कृष्ट लेखों को पुरस्कृत भी किया जाता है।

संस्थान ने हर वर्ष की ही तरह वर्ष 2006-2007 की वार्षिक रिपोर्ट के अंग्रेजी पाठ का हिन्दी रूपान्तरण बहुत कम समय तथा सीमित स्टाफ के होते हुए भी, कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवाएं लेकर इसे निर्धारित समय से पहले तैयार कर प्रस्तुत किया।

विगत वर्ष संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति ने 09 जून, 2007 को संस्थान के जम्मू स्थित क्षेत्रीय केन्द्र का राजभाषायी निरीक्षण किया तथा संस्थान में हो रहे कार्यो पर संतोष व्यक्त किया।

संस्थान ने हर वर्ष की भाँति वर्ष 2007-08 के दौरान दिनांक 21 से 27 सितम्बर, 2007 तक हिन्दी दिवस/सप्ताह का आयोजन बड़ी धूम-धाम से किया। जिसमें अनेकों गतिविधियों का हिन्दी में आयोजन किया गया। हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। सभी विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किए गए। इस दौरान संस्थान में सर्वाधिक कार्य हिन्दी में ही किया जाए इसके लिए विशेष अभियान चलाया गया। समारोह के उद्घाटन एवं समापन समारोह में विशिष्ट तथा अति विशिष्ट व्यक्तियों को सादर आमंत्रित किया गया।

विगत वर्ष में संस्थान ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं विकास को मध्य-नजर रखते हुए कुछ विशिष्ट कार्य किए हैं जिनकी हर स्तर पर अपार सराहना एवं भूरि-भूरि प्रशसा की गई, ये कार्य निम्नवत् हैः-

(क) राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

जल तथा जल संबंधी विभिन्न पहलुओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए संस्थान ने अपने रूड़की स्थित मुख्यालय में 26-27 सितम्बर, 2007 को **"भारतवर्ष के अविरल विकास में जल संसाधनों की भूमिका"** विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की। इस संगोष्ठी में देश के 8 विभिन्न राज्यों के 120 प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया। इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न/संगठनों/विभागों/एजेन्सियों के वैज्ञानिकों/इंजीनीयरों/शोधकर्ताओं ने 62 शोध पत्र राजभाषा हिन्दी में प्रस्तुत किए गए तथा इन्हें 9 समानान्तर सत्रों में प्रस्तुत किया गया। इस गतिविधि ने अन्य वैज्ञानिकों तथा इंजीनीयरों एवं शोधकर्ताओं को भी राजभाषा हिन्दी में अपने शोध पत्र तैयार करने की प्रेरणा दी।

संगोष्ठी की समूची कार्यवाही को एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया जिसमें कुल 551 पेज हैं* **इस संगोष्ठी में हमारे संस्थान के वैज्ञानिकों/शोध सहायकों द्वारा कुल 28 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए** ।

इस संगोष्ठी का उद्घाटन दिनांक 26 सितम्बर, 2007 को हुआ जिसमें श्री मातबर सिंह कण्डारी, माननीय सिंचाई मंत्री उत्तराखंड मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान थे। समापन समारोह दिनांक 27

सितम्बर, 2007 को आयोजित किया गया। इस समारोह में श्री जय प्रकाश नारायण यादव, माननीय जल संसाधन राज्य मंत्री, भारत सरकार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे तथा समारोह की अध्यक्षता श्री मदन कौशिक, माननीय शिक्षा, आबकारी तथा गन्ना मंत्री, उत्तराखण्ड ने की।

इस संगोष्ठी का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ तथा इसे हर स्तर पर सराहा गया जिसे मीडिया तथा अखबारों ने भी प्रमुखता से प्रचारित - प्रसारित किया। इस आयोजन से राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को व्यापक बढ़ावा तथा सम्मान मिला।

(ख) ग्रामीण महिलाओं के लिए कार्यशाला का आयोजन

ग्रामीण महिलाओं को जल तथा जल संरक्षण संबंधी जानकारी देने के उद्देश्य से संस्थान द्वारा दिनांक 18 मार्च, 2008 को पूर्व माध्यमिक विद्यालय गदरहेडी, जनपद (सहारनपुर) में हिन्दी में एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 125 से भी अधिक ग्रामीण महिलाओं तथा 40 स्कूली बच्चो ने भाग लेकर इसमें जल, जल संरक्षण, प्रबन्धन आदि विषयों की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर महिलाओं द्वारा अपने घरों से लाए गए पीने का पानी के नमूनों का परीक्षण किया गया तथा उन्हें उस पानी की गुणवत्ता से अवगत कराया गया तथा उन्हें घर के पानी को किस प्रकार से शोधित कर पीने योग्य बनाया जा सकता है इत्यादि जानकारियों से भी अवगत कराया गया। बच्चों के लिए ड्राइंग प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री गजे सिंह पंवार, एम.एल.सी. (उत्तर प्रदेश विधान परिषद) ने किया तथा इसकी अध्यक्षता बहुजन समाज पार्टी के जिला उपाध्यक्ष श्री अतुल पराशर ने की। इस अवसर पर कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इससे राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को व्यापक प्रसिद्धि एवं सम्मान मिला तथा ग्रामीण महिलाओं एवं बच्चों को पानी संबंधी जानकारी मिली।

***